पाठ 12

4RG9NP

स्वतंत्र भारत के परमवीर

(प्रस्तुत पाठ में देश के परमवीर चक्र विजेता सैनिकों के शौर्य का वर्णन किया गया है।) रमेश कक्षा-7 में पढ़ता है। उसके दादा भारतीय सेना में सूबेदार मेजर पद से अवकाश ग्रहण कर घर आ गये हैं। रमेश प्रतिदिन शाम को युद्धों से सम्बन्धित रोचक घटनायें दादा से सुनता रहता है। दादा जी को सेना में बहादुरी के लिए सेना मेडल मिला हुआ है। दादा जी से सुनी कहानियों को रमेश स्कूल में अपने कक्षा के दोस्तों रहमान, केशव तथा मंजरी को सुनाता रहता है। एक दिन रमेश के इन मित्रों ने तय किया कि वे रमेश के घर जाकर दादा जी से मिलेंगे और उनसे युद्ध सम्बन्धी ढेर सारी जानकारियाँ प्राप्त करेंगे। सभी बच्चे दादा जी से मिलने रमेश के घर पहुँचते हैं। प्रस्तुत है दादा जी के साथ बच्चों की वार्ता का एक अंश-

बच्चे- दादाजी! प्रणाम।

दादा जी-बच्चो खुश रहो। मुझे पता था कि आज तुम लोग आने वाले हो। आओ, सब लोग मेरे पास बैठो।

रमेश-दादा जी ये मेरे सबसे अच्छे मित्र हैं। ये सभी देश की रक्षा में वीर जवानों के योगदान के बारे में जानना चाहते हैं।

दादा जी-ठीक है बच्चो! तुम क्या जानना चाहते हो ?

केशव- दादाजी, आपको सेना में बहादुरी के लिए सेना मेडल मिला हुआ है। हम जानना चाहते हैं कि भारतीय सेना का सबसे बड़ा सम्मान कौन सा है ?

दादा जी- हमारे देश में सैनिकों को दिये जाने वाले पदकों में परमवीर चक्र भारत का सर्वोच्च सैन्य अलंकरण है जो दुश्मनों के बीच में उच्च कोटि की शूरवीरता एवं त्याग के लिए प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार की स्थापना 26 जनवरी 1950 को की गयी थी , जब भारत गणराज्य घोषित हुआ।

रहमान- दादाजी, परमवीर चक्र सम्मान सबसे पहले किसे प्रदान किया गया ?

दादा जी- सबसे पहला परमवीर चक्र सम्मान मेजर सोमनाथ शर्मा को दिया गया था।

रहमान- उनके बारे में हमें विस्तार से बताइए।

दादा जी- हमने उन्हें देखा तो नहीं है किन्तु हमारे यूनिट में उनके बहादुरी की चर्चा अक्सर होती रहती थी। मेजर सोमनाथ शर्मा का जन्म हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा में 31 जनवरी 1923 को हुआ था। उनके पिता मेजर जनरल अमरनाथ शर्मा थे।

मेजर सोमनाथ 03 नवम्बर 1947 को अपनी कम्पनी के साथ कश्मीर घाटी के बडगाँव में गश्त पर थे। लगभग 500 की संख्या में दुश्मनों ने उन्हें तीन तरफ से घेर लिया। युद्ध में कम्पनी के सैनिक तेजी से हताहत होने लगे। मेजर शर्मा ने अपने सैनिकों का हौसला बढ़ाते हुए बहादुरी के साथ दुश्मनों का सामना करने को कहा। स्वयं गोलीबारी की परवाह न करते हुए वे कपड़े की मदद से अपने वायुयानों को दुश्मन के ठिकानों का संकेत देते

रहे। जब सैनिकों की संख्या कम होने लगी तब वे स्वयं मशीनगन की मैगजीन भरकर सैनिकों तक पहुँचाने लगे। उस समय उन्होंने अपने बाँये हाथ में चढ़े प्लास्टर की भी परवाह न की। तभी अचानक एक बम उनके करीब आ गिरा और वे शहीद हो गये। शहीद होने से पहले उन्होंने ब्रिगेड हेडक्वार्टर को अन्तिम मैसेज दिया था-"दुश्मन हमसे केवल 50 गज की दूरी पर है। हमारे सैनिक शहीद होते जा रहे हैं। हम भारी गोलीबारी के बीच हैं, किन्तु हम पीछे नही हटेंगे और अन्तिम सैनिक व अन्तिम गोली रहने तक लड़ेंगे।"

मंजरी-दादाजी रमेश ने मुझे बताया था कि आपने कारगिल युद्ध में दुश्मनों के दाँत खट्टे कर दिये थे। कारगिल युद्ध में किन शूरवीरों को परमवीर चक्र दिया गया ?

दादा जी- कारगिल की लड़ाई बहुत विपरीत परिस्थितियों में लड़ी गयी थी। दुश्मन की चालाकी और विश्वासघात से हम अनजान थे। हमारी सेना के जवानों ने हर परिस्थिति का सामना करते हुए विजय प्राप्त की। मैं तुम्हें अपने उत्तर प्रदेश के रणबाँकुरे कैप्टन मनोज पाण्डेय के बारे में बताता हूँ।

कैप्टन मनोज पाण्डेय का जन्म 25 जून 1975 को सीतापुर उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनके पिता का नाम गोपीचन्द्र तथा माता का नाम मोहिनी था। कारगिल युद्ध के दौरान खालूबार को फतह करने का जिम्मा कैप्टन मनोज पाण्डेय की कम्पनी को दिया गया था। कैप्टन पाण्डेय को युद्ध में कम्पनी की अगुआई करते आगे बढ़ना था। जैसे ही कम्पनी आगे बढ़ी उन पर दो तरफ की पहाड़ियों से जिन पर दुश्मनों ने अपना बंकर बना रखा था, जबरदस्त गोलाबारी होने लगी। उन्होंने तुरन्त हवलदार भीम बहादुर की टुकड़ी को आदेश दिया कि वह दाहिनी तरफ के दो बंकरों पर हमला कर उन्हें नाकाम करें और स्वयं बायंे

तरफ के चार बंकरों को नष्ट करने के लिए आगे बढ़े। एक के बाद एक करके चार दुश्मनों को मार गिराया। इस कार्यवाही में वे बुरी तरह से जख्मी हो गये किन्तु वे इसकी परवाह किये बिना दो बंकरों को नष्ट करते हुए तीसरे बंकर की ओर बढ़े। उसे नष्टकर जब चैथे बंकर की ओर बढ़कर उसे नष्ट करने के लिए आक्रमण किया तभी दुश्मन की गोली उनके माथे पर लगी और वे वही शहीद हो गये किन्तु उनके द्वारा फेंके गये ग्रेनेड से चैथा बंकर भी नष्ट हो गया। उनकी इस वीरता के लिए उन्हे परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

केशव- कैप्टन मनोज पाण्डेय के बारे में हमने भी समाचार पत्रों में पढ़ा था। देश के लिए कुर्बान होने वाले इन वीर जवानों को हम सलाम करते हैं। दादाजी! कारगिल युद्ध में उत्तर प्रदेश के अन्य सैनिक को भी यह सम्मान मिला हैं ?

दादाजी- हाँ ! मिला है न। उत्तर प्रदेश के निवासी ग्रेनेडियर योगेन्द्र सिंह यादव को सबसे कम आयु में परमवीर चक्र से सम्मानित होने का गौरव प्राप्त है।

इनका जन्म बुलंदशहर जनपद के औरंगाबाद अहीर गाँव में 10 मई 1980 को हुआ था। सन् 1999 ई0 में जम्मू कश्मीर के कारगिल क्षेत्र की 16 से 18 हजार फुट ऊँची पहाड़ियों पर पाकिस्तानी घुसपैठियों ने कब्जा जमा लिया था। इन घुसपैठियों ने श्रीनगर को लेह से जोड़ने वाले महत्वपूर्ण राजमार्ग पर गोलीबारी आरम्भ कर दी। 2 जुलाई को कमांडिग आफिसर कर्नल कुशल ठाकुर के नेतृत्व में ग्रेनेडियर योगेन्द्र को टाइगर हिल पर कब्जा करने का आदेश मिला। दल में ग्रेनेडियर योगेन्द्र सिंह यादव सहित 7 कमाण्डो शामिल थे। टाइगर हिल पर घुसपैठियों की तीन चैकियाँ बनी थी। पहले मुठभेड़ में पहली चैकी पर कब्जा कर 7 कमाण्डो वाला दल आगे बढ़ा। कुछ ही दूर आगे बढ़ने पर दुश्मन की ओर से

अन्धाधुन्ध गोलीबारी आरम्भ हो गयी। जिसमें दो सैनिक शहीद हो गये। दोनों सैनिकों को वापस छोड़ शेष पाँच जाँबाज सैनिक आगे बढ़े किन्तु पुनः एक भीषण मुठभेड़ हुई जिसमें चार कमाण्डो और शहीद हो गये और बचे केवल योगेन्द्र सिंह यादव। हालाँकि वह भी बुरी तरह घायल थे उनके हाथ में एक और जांघ में दो गोली लगी थी। उनके बायें हाथ की हड्डी टूट गयी थी और हाथ ने काम करना बंद कर दिया था फिर भी वे हिम्मत नही हारे। हाथ को बेल्ट से बाँधकर कोहनी के बल चलना आरम्भ किया और इस स्थिति में भी कई घुसपैठियों को मार गिराया। इस प्रकार दूसरी चैकी पर भी कब्जा हो गया। योगेन्द्र सिंह ने अकेले ही अपने अदम्य साहस का परिचय देते हुए चैकी पर शेष बचे घुसपैठियों को मार गिराया और तीसरी चैकी पर भी कब्जा कर लिया। इसी बीच उन्होंने पाकिस्तानी कमाण्डर की आवाज सुनी जो अपने सैनिकों को 500 फुट नीचे भारतीय चैकी पर हमला करने के लिए आदेश दे रहा था। इस जानकारी को अपनी चैकी तक पहुँचाने के लिए अपनी जान की बाजी लगाकर योगेन्द्र ंिसंह ने पत्थरों पर लुढ़कना प्रारम्भ किया तथा जानकारी देने में सफल भी रहे जिससे दुश्मनों को खदेड़ कर भारतीय चैकी को बचा लिया गया।

रहमान- दादाजी यह वीर तो अद्भुत हैं। ग्रेनेडियर योगेन्द्र ंिसह यादव ने मात्र 19 वर्ष की आयु में जो वीरता दिखाई है, उस पर हम सभी को गर्व है। हमारी इच्छा और शूरवीरों के बारे में जानने की हो रही है।

दादा जी- मैं तुम लोगों को कारगिल की लड़ाई में इस सम्मान को पाने वाले राइफल मैन संजय कुमार के बारे में बताना चाहता हूँ जो मेरे ही प्लाटून का सैनिक था। संजय कुमार की बहादुरी को मैंने अपनी आँखों से देखा था।

मुश्कोह घाटी पर स्थित चैकी नम्बर 4875 पर फतह किये बिना द्रास के हैलीपैड पर अपना हेलीकाप्टर उतारना सीधे-सीधे दुश्मन के निशाने पर आना था। इस स्थिति में 4 जुलाई 1999 को राइफल मैन संजय कुमार जब हमले के लिए आगे बढ़े तो दुश्मनों ने आॅटोमेटिक गन से जबरदस्त गोलाबारी आरम्भ कर दी और आगे बढ़ना कठिन हो गया था। स्थिति की गम्भीरता का देखते हुए संजय कुमार ने यह तय किया कि उस ठिकाने को अचानक हमले से खामोश कर दिया जाय। इसी इरादे से संजय कुमार ने यकायक हमला कर आमने-सामने मुठभेड़ में तीन दुश्मनों को मार गिराया। इस आकस्मिक आक्रमण से दुश्मन बौखलाकर भाग खड़े हुए और अपना मशीनगन भी छोड़ गए। इस मुठभेड़ में संजय कुमार पीछे नहीं हटे और दुश्मनों की मशीनगन से ही उनका सफाया करना आरम्भ किया और तब तक जूझते रह जब तक वह प्वाइंट (चैकी) दुश्मनों से पूरी तरह खाली नहीं हो गया। इस वीर सैनिक का जन्म 3 मार्च 1976 को बिलासपुर हिमाचल प्रदेश में हुआ था। उनके इस अदम्य साहस के लिए भारत सरकार ने उन्हे परमवीर चक्र से अलंकृत किया।

मंजरी- दादाजी! मेरे पिताजी कारगिल युद्ध में शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा की चर्चा अक्सर घर में करते हैं। आप उनके बारे में भी हमें बताएँ।

दादा जी- 9 सितम्बर 1974 को हिमाचल प्रदेश के पालमपुर में पैदा हुए कैप्टन विक्रम बत्रा दिसम्बर 1997 में अपनी शिक्षा समाप्त कर सोपोर में सेना की 13 जम्मू कश्मीर राइफल्स में लेफ्टिनेंट के पद पर नियुक्त हुए।

1 जून 1999 को कारगिल युद्ध के दौरान हम्प और राकीनाब स्थान को जीतने के बाद उन्हें कैप्टन बना दिया गया। कैप्टन विक्रम बत्रा को श्रीनगर-लेह मार्ग के ठीक ऊपर सबसे महत्वपूर्ण चोटी-5140 को पाक सेना से मुक्त करवाने का जिम्मा दिया गया। वह क्षेत्र बहुत ही दुर्गम था फिर भी विक्रम बत्रा ने अपने साथियों के साथ 20 जून 1999 को सुबह 3:30 बजे तक इस चोटी को अपने कब्जे में ले लिया। इसके बाद प्वाइंट-4815 को भी कब्जे में लेने की बागडोर इन्हें सौंपी गयी। इस अभियान में उन्होंने अपनी जान की परवाह किये बिना अभूतपूर्व वीरता का परिचय दिया और वीरगति को प्राप्त हुए। इस अदम्य साहस के लिए उन्हें मरणोपरान्त भारत के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

बच्चे-दादाजी, आपने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले इन वीरों के बारे में बताकर हम बच्चों का बहुत मनोबल बढ़ाया है।

अन्त में सभी बच्चों ने दादा जी को पैर छूकर प्रणाम किया और अपने-अपने घर लौट गये।

शब्दार्थ

सन्नद्ध=युद्ध के लिए तैयार, तत्पर। **मेजर जनरल**=भारतीय थल सेना में जनरल लेफ्टिनेंट जनरल के नीचे का रैंक। **मेजर**=भारतीय थल सेना का लेफ्टिनेंट के बाद ऊपर का रैंक। **कम्पनी**=80.150 सैनिकों की यूनिट। **हताहत**=घायल होकर मरना। **मैगजीन**=बन्दूकों के साथ लगा छोटा बाक्स जिसमें गोलियां भरी जाती है। **गोरखा राइफल**=एक रेजीमेंट का नाम। **प्लाटून**=सेना की टुकडी जिसमें 40.50 सैनिक होते है। **बंकर**=धरती में खोदकर छिपने के लिए बनाया गया स्थान। **ग्रेनेड**=गोला-बारूद का एक प्रकार जिसे फेंक कर विस्फोट किया जाता है। **18 ग्रेनेड**=एक रेजीमेंट का नाम। **चौकी**=सुरक्षा (निगरानी) के लिए बनाया गया स्थान। **लेफ्टिनेंट**=कमीशण्ड अधिकारी का पहला रैंक। **दुर्गम**=स्थान जहाँ आसानी से पहुँचा नहीं जा सकता।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

(क) सभी परमवीर चक्र विजेताओं के बारे में जानकारी एकत्र कर पुस्तिका में लिखिए।

(ख) भारत ने किन-किन देशों के साथ युद्ध लड़ा, पता करके लिखिए।

(ग) अपने घर के आस-पास रहने वाले किसी सैनिक से साक्षात्कार कर उनके अनुभवों को लिखिए।

विचार और कल्पना

(क) देश के विकास के लिए आप क्या योगदान देना चाहेंगे ? लिखिए।

(ख) बताइए यदि आपको सेना का कमाण्डर बनने का अवसर दिया जाय तो आप क्या करना चाहेंगे ?

(ग) सीमा पार से आतंकियों की घुसपैठ को कैसे रोका जा सकता है ? अपने विचार दीजिए।

(घ) सोचकर बताइए, एक सैनिक को सीमा पर किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ता होगा ?

पाठ से

(क) रमेश के ़मित्र उसके घर क्यों जाना चाहते थे ?

(ख) युद्ध के दौरान सर्वोच्च वीरता का प्रदर्शन करने वाले सैनिक को किस पदक से सम्मानित करने का प्रावधान है ?

(ग) कारगिल युद्ध में किन सैनिकों को परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया ?

(घ) सबसे कम उम्र में परमवीर चक्र विजेता बनने का गौरव किसे प्राप्त है ?

(ड.) कैप्टन विक्रम बत्रा ने 20 जून 1999 को क्या कामयाबी हासिल की ?

भाषा की बात

1-दिये गये शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए-

(i) चक्र = च्+अ+क्+र+अ

(ii) युद्ध = - - - - -

(iii) सैनिक = - - - - - -

(iv) पदक = - - - - - -

2. मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य-प्रयोग कीजिए-

हौसला बढ़ाना, फतह करना, जान की बाजी लगाना, प्राणों की आहुति देना।

3. पाठ में कंपनी, मशीनगन जैसे अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है। इसी तरह के अन्य शब्दों को छाँटकर लिखिए।